CASE STUDY

अपना स्वास्थ्य, अपनी पहल

गुढेलिया पंचायत
गोविन्दगढ ब्लॉक
जयपुर जिला

2017/No. 08

काम के लिये पद या वक्त नही बस जूनुन और होंसला चाहिये

स्वयंसेवकों के लिये आयोजित प्रशिक्षण में उन्हे बुलाकर कार्यक्रम के बारें में जानकारी देते

खोल दे पंख मेरे, कहता परिंदा, अभी ओर उडान बाकी है।
जमी नही है, मजिंल मेरी, अभी पूरा आसमान बाकी है।
लहरो की खामोशी को समन्दर की बेबसी मत समझ, ऐं नादॉ,
जितनी गहराई अन्दर है बाहर उतना ही तूफान आना बाकी है।

चौमू तहसील की गोविन्दगढ पंचायत समिति की गुढेलिया पंचायत के रहने वाले सुरज्ञान मीणा के बारें मे ये पक्तिंया सही बैठती हैं। 30 वर्षीय सुरज्ञान के चेहरे पर उसके समाज के लिये कुछ कर गुजरने का जूनन साफ दिखाई देता है। बहुत ही कम समय में उनसे बातचीत के दौरान सामने वाले को उनके इस हौसले और जूनन का अंदाजा हो जाता है।

प्रिया से जुड़ाव

MA.Bed कर चुके सुरज्ञान मीणा बताते है कि जब प्रिया प्रतिनिधी सरंपच साहब से मिलने आये तब उनका परिचय प्रिया की प्रतिनिधी श्रीमति रेखा कुमावत से हुआ।

पचांयत मे ई– मित्र कियोस्क पर कंम्प्यूटर ऑपरेटर के रूप में कार्य कर रहे सुरज्ञान बताते है कि वो बहुत ही दिनों से कुछ ऐसे काम की तलाश मे थे जो समाज के लोगो से सीधा जुडा हुआ हो पर इस काम की वजह से उनका पंचायत में काम भी खराब न हो। इसलिये उन्होने रेखा जी से सारी जानकारी ली और अपने जुडने की इच्छा जाहिर कर दी। वो आगे कहते है कि मैने प्रिया से जुडने के लिये और उनके साथ मिलकर काम करने की इच्छा तो जाहिर कर दी थी पर मुझे स्वास्थ्य और पोषण से जुडी ज्यादा जानकारी नही थी। प्रिया के द्वारा आयोजित प्रशिक्षण में भाग लेने के बाद मुझे किये जाने वाले कार्यो की जानकारी मिल गई पर अब समस्या ये थी कि करना कैसे है यह समझ में नही आ रहा था। बाद में जब मेरी रेखा जी से मुलाकात हुई तब मैने अपनी भूमिका को अच्छी तरह से समझा।

सुरज्ञान के साथ प्रिया के द्वारा किये गये प्रयास

उनका स्वयंसेवक के रूप में प्रिया से जोडा।
स्वयंसेवकों के लिये आयोजित प्रशिक्षण में उन्हे बुलाकर कार्यक्रम के बारें में जानकारी दी।
समय समय पर सुरज्ञान से मिलकर उनको उत्साहित किया जाता।
प्रिया के द्वारा उन्हे समय समय पर पढने के लिये सामग्री दी जाती जिससे वो अपनी जानकारी और समझ को बढा सके।

आने वाली प्रमुख परेशानियां

प्रशिक्षण और जानकारी प्राप्त कर लेने के बाद लोगो की सोच को बदलने की सबसे बडी चुनौती थी क्यों कि
सरपंच स्वयं ही महिला सभा और आंगनवाडी जैसी सुविधाओं को लेकर खुश नही थे। उन्हे लगता था कि यह सब बेकार की बाते है। महिलाओं को ज्यादा बोलने की आजादी देने से काम खराब हो जाते है। सुरज्ञान सरपंच के साथ अन्य पंचायतीराज सदस्यो की सोच के बारे में बताते हुये कहते है कि सबको यही लगता है कि महिलाओं और बच्चों से जुडी हुई कोई भी समस्या नही है।
वो आगे कहते है कि महिलायें स्वयं भी अपने अधिकारो के प्रति जागरूक नही है वो जो जिन्दगी चल रही है उसी के हिसाब से चलना चाहती है। परिवार का सहयोग उनको पूरी तरह नही मिल पाता है। महिला सभा पहली बार हो रही थी तो उनको इसमें बुलाना भी थोडा मुश्किल था।

महिला ओर बच्चों के स्वास्थ्य के साथ ही पंचायत पर प्रभाव

सरपंच की उदासीनता के कारण आंगनवाडी केन्द्रों पर मिलने वाली सेवाये और सुविधायें प्रभावित हो रही थीं।
महिलाओं से जुडे मुद्दे न तो सामने आ पा रहे थे और नही उनका समाधान होता था।
समुदाय के लोगों के बीच जागरूकता की कमी के कारण वो अपनी पंचायत के विकास में अपनी भूमिका नही निभा रहे थे।
ग्राम पंचायत का ध्यान स्वास्थ्य और अन्य सेवाओं को बेहतर करने पर नही था।

सुरज्ञान के द्वारा किये गये प्रयास एक नजर में

महिला सभा का सफल आयोजन करवाने में अपनी भूमिका को बहुत ही अच्छे से निभाया। पंचायत में आने वाली हर महिला को महिला सभा की जानकारी देने के साथ साथ आंगनवाडी और उपस्वास्थ्य केन्द्र पर जाकर भी उन्होने महिला सभा के बारें में जानकारी दी।
मोटरसाईकिल पर माईक लगाकर स्वंय ही ग्राम पंचायत में महिला सभा होने का प्रचार किया।
सभी महिलाओं को वो एक पम्पलेट देना नही भूलते है जिस पर सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं की जानकारी है। यह पम्पलेट वो स्वयं पंचायत समिति से जाकर लेकर आये थे।
अपनी पंचायत को शौच मुक्त करने के लिये वो स्वंय भी जाकर समुदाय के लोगों से बात करते है और उन्हे प्रेरित करते है।
उनके ही प्रयासों से गोविन्दगढ टीम में एक साथी ममता जी की नियुक्ति हुई है।
ग्राम स्वास्थ्य, स्वच्छता, पेयजल एवं पोषण समिति की बैठक को करवाने में सहयोग करना।

सुरज्ञान के द्वारा किये गये प्रयासों का पंचायत और समुदाय पर प्रभाव एक नजर में

महिलाओं को अपनी बात कहने का मौका मिल रहा है।
सरंपच अब थोडा बहुत महिलाओं से जुडे मुद्दो पर अपनी सहमति दिखाने लगे है और आने वाले समय बडे स्तर पर महिला सभा कराने पर सहमति बनी है।
समुदाय के लोगों तक अब योजनाओं की जानकारी बढ रही है।
टीकाकरण से वचिंत बच्चों की सूची मिलने पर उनके परिवार से बात की जाती है।

आने वाली प्राथमिकतायें

सुरज्ञान जी से जब यह पूछा गया कि वो आने वाले समय में अपनी पंचायत के लिये क्या प्लान लेकर चल रहे हैं तो उन्होने अपनी निम्न प्राथमिकतायें बताईं।
बहुत ही बड़े स्तर पर महिला सभा का आयोजन करवाना।
आंगनवाडी पर होने वाले टीकाकरण दिवस पर समुदाय की उपस्थिति को सुनिश्चित करने का प्रयास करना।
पंचायत स्तर पर विभागों के द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का प्रचार प्रसार करवाना।

प्रिया के साथ जुड़ने के बाद उनके स्वयं के विचार

जब उनसे इस बारे में पूछा गया तो वो कहते है कि प्रिया ने न केवल मेरा आत्मविश्वास बढाया बल्कि ज्ञान में इजाफा हुआ। वो कहते है कि मै अब अच्छे से अपने समाज के लिये काम कर रहा हू और मुझे सतोंष है। जो काम मैं करना चाहते था अब बिना अपने काम को खराब किये कर पा रहे हूं। वो आगे कहते है कि समुदाय के लोगों के बीच जागरूकता का अभाव होने के कारण वो अपने स्वास्थ्य ओर जीवन के विकास के प्रति उदासीन रहते है। वो कहते है कि अब मै इस उदासीनता का दूर कर उन्हे हर बात की जानकारी देना चाहता हूं।

पंचायत से जुड़े हुये लोगो के विचार

आंगनवाड़ी पर कार्यरत कार्यकर्ता श्रीमति अनिता जोया कहती है कि सुरज्ञान बहुत ही मिलनसार है ओर वो हमेशा महिलाओं के हकों ओर अधिकारों की बात करते हैं तथा हम कोई भी बात लेकर जाते हैं तो वो सरपंच से कहकर उसका समाधान करवा देते हैं। गावं में लगभग सारे लोग इन्हे जानते है और इनकी बात को सुनते हैं।

गुडेलिया के सरपंच श्री रामचन्द्र कहते हैं कि सुरज्ञान काम के प्रति बहुत ही गम्भीर है और वो हमेशा किसी न किसी तरह से समुदाय के लिये कुछ न कुछ करने की सोचता रहता है। इससे पंचायत के लोगो को फायदा पहुंचता है।

सुरज्ञान अपने प्रयासों के बारें में कहते हैं कि सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं की जानकारी गावों तक बहुत ही लेट पहुचती है और वो भी पूरी तरह से नही दी जाती है। वो कहते हैं कि लोग आज भी यह नही समझ पाये हैं कि जब तक महिला ही स्वस्थ नही होगी तब तक परिवार के स्वस्थ होने की कल्पना नही की जाती है।

वो बताते है कि यह बात सही है कि महिलाओं की पहले जैसी स्थिति नही पर फिर भी नये समय के हिसाब नई तरह की चुनौतियां और परेशानियां पैदा हो गई हैं।

वो कहते है अगर स्वास्थ्य से जुड़ी बातें महिला की समझ में आ जायें और परिवार का उसे सहयोग मिले तो वो अकेले ही अपने पूरे परिवार को स्वस्थ रख सकती हैं।

महिला सभा के बारें में कहते है कि पहली बार इस तरह की कोई सभा हुई है पर उम्मीद से कम महिलायें आई लेकिन यह पहला प्रयास है और अब मै काम को बेहतर तरीके से समझ गया हूं ओर लोगों के साथ बेहतर तरीके से अपनी बात कह पा रहा हूं। अगली ग्राम सभा मे हर घर से एक व्यक्ति और महिला सभा में एक महिला के आने का लक्ष्य कर रखा है। वो आगे कहते है कि पहले तो लोग यही समझते थे कि मैने कोई पार्टटाईम काम कर लिया है और मुझे इसके लिये अलग से पैसा मिलता है पर अब धीरे धीरे यह बात लोगों को समझ में आ गई है और वो सहयोग करने लगे है।

अगर देखा जाये तो दिन भर पंचायत में व्यस्त रहने के बाद भी इस तरह की सोच और प्रयास कोई आसान काम नहीं होता है। सुरज्ञान ने अपने जीवन का एक ही लक्ष्य बना रखा है कि जैसे भी हो लोगों के जीवन स्तर में सुधार होना चाहिये। किसी का भी जीवन जानकारी के अभाव में गुजरे। सुरज्ञान को देखकर एक बात और साफ हो जाती है कि काम करने के लिये किसी पद या किसी विशेष मौके की जरूरत नही होती जो काम करना चाहे वो कहीं से भी इसके लिये समय और मौका निकाल लेते है। उनका यह जूनून दूसरो के लिये भी प्रेरणा स्रोत बन सकता है।

This case study was written by Subodh kumar Gupta, Program Officer for PRIA's "Reforming Local Governance For Responsive And Effective Service Deliveries In Selected Blocks Of Rajasthan" Project, in Partnership with Azim Premji Philanthropic Initiatives (APPI) and Dasra.